

पहले चरण: बिहार की चार सीटों के लिए आज डाले जाएंगे वोट

पटना, हिन्दुस्तान ब्लूज़े। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में कड़ी सुख के बीच बिहार की चार समेत प्रदेश में औरंगाबाद, गया (सु.) नवादा एवं जमुई (सु.) निवासी क्षेत्र में 7903 वृथों पर मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इस चारों सीटों पर 38 उम्मीदवार चुनाव में दाना हैं जिनमें राष्ट्रीय स्तर के दानों के 6 वा राज्य संसदीय दानों के 5 उम्मीदवार शामिल हैं। 13 निवासी और 14 अन्य निवासी दानों के प्रत्याशी भी आगे आजमा रहे हैं।

उम्मीदवारों में 35 पुरुष और 3 महिला हैं। लेकिन, मुख्य मुकाबला इंडिया गठबंधन द्वारा एंडीए के प्रत्याशी के बीच होगा। सामान्य वृथों पर सुख जमुई 6 बजे से 7 बजे शाम तक और अति संवेदनशील वृथों पर सुख 7 बजे से 6 बजे शाम तक और अति संवेदनशील वृथों पर सुख 7 बजे से 5 बजे शाम तक और अति संवेदनशील वृथों के 5 उम्मीदवार शामिल हैं। 13 निवासी और 14 अन्य निवासी दानों के प्रत्याशी भी आगे आजमा रहे हैं।

उम्मीदवारों में 35 पुरुष और 3 महिला हैं। लेकिन, मुख्य मुकाबला इंडिया गठबंधन द्वारा एंडीए के प्रत्याशी के बीच होगा। सामान्य वृथों पर सुख जमुई 6 बजे से 7 बजे शाम तक और अति संवेदनशील वृथों पर सुख 7 बजे से 5 बजे शाम तक और अति संवेदनशील वृथों के 5 उम्मीदवार शामिल हैं। 13 निवासी और 14 अन्य निवासी दानों के प्रत्याशी भी आगे आजमा रहे हैं। जानकारी के अनुसार पहले चरण के चुनाव को होमार्ड, 5 हजार अधिकारी और 152 कंपनी के द्वारा विभिन्न अधिसैनिक बल, 50 कंपनी बीसैन, 16 हजार



गया जिले के अति नवसल प्रभावित द्विमिया प्रखंड की छकरबंधा चांचायत के पांच नवसल वृथों पर हेलीकॉप्टर से मतदान कर्मियों को भेजा गया।

लोकसभा चुनाव में पहले चरण के महारथी

सीट	एनडीए	इंडिया
जमुई	अरुण भारती (लोजपा-आर)	अर्चना रविदास (राजद)
ओरंगाबाद	सुशील कुमार सिंह (माजपा)	अभय कुशवाहा (राजद)
गया	जीतन राम मंझी (हम)	कुमार सर्वजीत (राजद)
नवादा	विवेक ठाकुर (भाजपा)	श्रवण कुशवाहा (राजद)

के अनुसार पहले चरण के चुनाव को होमार्ड, 5 हजार अधिकारी और 152 कंपनी के द्वारा विभिन्न अधिसैनिक बल, 50 कंपनी बीसैन, 16 हजार

पहले चरण के 63% वृथों अति संवेदनशील घोषित

पटना। चारों सीटों के सभी 7903 वृथों पर साथ सुखा बानों की तोनती की जाएगी। इस चरण में 35.5 फीसदी यानी 2021 वृथों अति संवेदनशील घोषित की गया है। ओरंगाबाद में 170.1, गया में 995, नवादा में 666 और जमुई में 1659 वृथों की अति संवेदनशील घोषित किया गया है।

समी की चार क्षेत्रों में गर्म हवा के बीच होगा मतदान

पटना। प्रथम चरण में शुक्रवार की ओरंगाबाद, जमुई और नवादा में मतदान होगा। इन चारों जिलों के साथ ही रायगढ़ में तू. जैसे हालत रहने के असर हैं। रायगढ़ और उग्राह से प्राप्त आड़ों के विलोपण के अनुसार चारों लोकसभा क्षेत्र का अधिकारी चारों तात्परा में 42 डिग्री सेलिंयर के बीच होगा।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि उहाँने वह वीडियो देखा है। पब्लिक में लोग बोल रहे हैं, मंच पर कोई नहीं बोल रहा है।

एंडीए ने कहा कि उहाँने वह वीडियो का हवाला देकर भाजपा और एंडीए ने चुनाव आयोग में शिकायत दर्ज कराई है। नई दिल्ली स्प्रिंग मुख्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार के मुख्य निर्वाचन विधिकारी व जमुई के जिला निर्वाचन पदाधिकारी के समस्त शिकायत दर्ज कराई गई। शिकायत में कहा कि चुनाव के दौरान कौन बेकूफ होगा जो ऐसी बात करेगा।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

नेताओं द्वारा चिराग पासवान और उनकी मातृता के बिरुद्ध ने बल अपराधीयों का इस्तेमाल किया गया।

पहले चरण के चुनाव ने कहा कि हम बाजार में रहे हैं, हाजारों लोग हैं,

कोई भी अपना वीडियो बनाकर भेज

जाएगा। यह शीर्षी बाजार में रहे हैं, और उनकी हांडी को हिरास लेकर इस तरह की बात करता तो मैं वही भुट्ठोड़ जावा देता।

न

भारत का समर्थन

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता पर भारत की दावेदारी दिनोंदिन मजबूत होती जा रही है। अमेरिका ने फिर एक बार भारत की स्थायी सदस्यता के अनुकूल टिप्पणी की है। दरअसल, दुनिया के सबसे अमीर लोगों में शुमार टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने यह मामला उठाया था और उस पूछे गए सवाल का अमेरिकी विदेश विभाग ने जवाब दिया है। एक प्रेस वार्ता के दौरान, अमेरिकी विदेश विभाग के प्रधान उप-प्रवक्ता वेदांत पटेल ने कहा है कि गण्डूपीले ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपनी टिप्पणियों में पहले भी इस बारे में बात की है और हम निश्चित रूप से सुरक्षा परिषद सहित संयुक्त राष्ट्र संस्था में सुधारों का समर्थन करते हैं। अमेरिका का यह कूटनीतिक जवाब भारत के साथ-साथ एलन मस्क को भी खुश करने की दिशा में अगर दिया गया है, तो भी इसके महत्व को समझा जा सकता है।

अमेरिका का हार ब्यान सोची-समझी रणनीति के तहत होता है और

सियासत में सर्वेक्षणों पर कितना भरोसा



संजय कुमार | प्रोफेसर, सीएसडीएल



पु

चूंकि भारत सरकार अनेक बाले दिनों में एलन मस्क के लिए देश के दरवाजे खोलने वाली है, इसलिए भी एलन मस्क और अमेरिका के विचारों की बायर भारत की दिशा में बह रही है। यह खुशी की बात जरूर है, पर ऐसा नहीं कि इससे भारतीय लोग अभिभूत हो जाएं। भारत में जब टेस्ला के उपायों की बिक्री बढ़ेगी, तब जाहिर है, मस्क के साथ ही अमेरिका फायदे में रहेगा। विगत तीन महीने से एलन मस्क को यह एप्सास हुआ है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का न होना बहुत कठिन है और उसे अफ्रीका महादेश के साथ सुरक्षा परिषद में शामिल किया जाना चाहिए। ध्यान रहे, सुरक्षा परिषद में अमेरिका, रूस, फ्रांस, इंडिया और चीन स्थायी सदस्य हैं। यह अक्सर कहा जाता है कि भारत ने उदारतावश अपनी जगह चीन को सौंप दी थी, पर आज की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि चीन ही सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का सबसे बड़ा विरोधी है।

फ्रांस, अमेरिका, रूस तो समय-समय पर भारत का पक्ष लेते रहे हैं, पर इन देशों ने भी कोई ठोस पहल नहीं की है। कथनी और करनी में जीवन-आसमान का फर्क है। जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, अनेक देशों के नामों की चर्चा शुरू हो जाती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

यह बात दुनिया का होके देश जानता है कि संयुक्त राष्ट्र धीर-धीरे अप्रभावी होता जा रहा है। आक्रमक देशों के सामने नख-दंत हीन होता जा रहा है। यह देखने वाली बात है कि ज्यादातर देशों में तानाशह जैसे नेता सत्ता में हैं, जो साप्ताहिकादी मनसूबे पाले रहे हैं। सुरक्षा परिषद के दो स्थायी सदस्यों रूस और चीन की विस्तारादी नीतियां तो संयुक्त राष्ट्र के कारण होने में अब सबसे बड़ी बाधा हैं। जिस चीन की नजरें भारतीय जीवन पर गड़ी हैं, वह भला क्यों चहाँग कि भारत विश्व स्तर पर ज्यादा सुखदाह हो जाए? पर यह समय का ताजा जाता है कि भारत को दुनिया में आज नहीं, तो कल उचित स्थान देना ही पड़ेगा। जैसे एलन मस्क ने भारत के पक्ष में मुंह खोला है, तीक उसी तरह से भारतीय भूमि या विश्वाल बाजार से भरपूर लाभावधि होने वाले देश और दुनिया के अन्य उद्यमियों को भी भारत की पैरोकारी मजबूती से करनी चाहिए। हमारे विदेश मंत्री प्रस जयशंकर का यह कहना बहुत सही है कि 'दुनिया आसानी से और उदारता से चीजें नहीं देती हैं; कभी-कभी आपको उन्हें लेना पड़ता है'।

यह बात दुनिया का होके देश जानता है कि संयुक्त राष्ट्र धीर-धीरे

अप्रभावी होता जा रहा है। आक्रमक देशों के सामने नख-दंत हीन

होता जा रहा है। यह देखने वाली बात है कि ज्यादातर देशों में तानाशह

जैसे नेता सत्ता में हैं, जो साप्ताहिकादी मनसूबे पाले रहे हैं। सुरक्षा

परिषद के दो स्थायी सदस्यों रूस और चीन की विस्तारादी नीतियां तो

संयुक्त राष्ट्र के कारण होने में अब सबसे बड़ी बाधा हैं।

जिस चीन की नजरें भारतीय पर गड़ी हैं, वह भला क्यों चहाँग कि भारत विश्व

स्तर पर ज्यादा सुखदाह हो जाए? पर यह समय का ताजा जाता है कि भारत को दुनिया में आज नहीं, तो कल उचित स्थान देना ही पड़ेगा।

जैसे एलन मस्क ने भारत के पक्ष में मुंह खोला है, तीक उसी तरह से

भारतीय भूमि या विश्वाल बाजार से भरपूर लाभावधि होने वाले देश

और दुनिया के अन्य उद्यमियों को भी भारत की पैरोकारी मजबूती से

करनी चाहिए। हमारे विदेश मंत्री प्रस जयशंकर का यह कहना बहुत

सही है कि 'दुनिया आसानी से और उदारता से चीजें नहीं देती हैं;

कभी-कभी आपको उन्हें लेना पड़ता है'

कभी-कभी आपको उन्हें लेना पड़ता है।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातानी में नियंत्रण टल जाए।

जैसे ही सुरक्षा परिषद के विस्तार की बात चलती है, ऐसा जान-बूझकर किया जाता है, ताकि विचारों की खींचातान



ग्राउंड रिपोर्ट

खजुराहो में एकतरफा मुकाबले की फिजा

खजुराहो सीट



कुल मतदाता
19,83,665

पुरुष मतदाता
10,39,999

महिला मतदाता
9,43,634

मैदान में उम्मीदवार

विष्णु दत शर्मा (भाजपा)
आर्यो प्रजापति (इंडिया गढ़वाल)

2019 लोकसभा चुनाव : माजपा की 4.92 लाख से ज्यादा मतों से जीत
विष्णु दत शर्मा (बीजेपी) 811,135
महारानी कविता सिंह नटीराजा (कांग्रेस) 318,753

मैदान में उम्मीदवार



विष्णु दत शर्मा, भाजपा



आर वी प्रजापति, इंडिया गढ़वाल

टिकोंड जीत के लिए माहौल

खजुराहो के विरोध पकाकर राजीव शुक्ला माने हैं कि भाजपा प्रत्याशी विष्णु दत शर्मा के लिए टिकोंड जीत से जीत की इसकी देहर अवसर नहीं हो सकती। इस वर्ष खजुराहो मैदान में जंग गया है, साइकिल पर वह हो चुकी है और हाथी काफी कमज़ोर नजर आ रहा है। पिछली बार भाजपा ने यह सीट लड़ रही है। भाजपा ने यह सीट कभी नहीं जीती है। लेकिन शिवसेना का यहां प्रभाव जल्द रहा है। विभाजित हो चुकी शिवसेना के बोट विंगे गुट के साथ जाते हैं तो फिर नवनीत राणा चुनाव जीत सकती है। लोकन यदि शिवसेना के मत उद्धव ठाकरे के साथ रहते हैं तो फिर कांग्रेस उम्मीदवार की जीत हो सकती है।

2019 में शीर्षदलीय उम्मीदवार :

अमरावती में छठे विधानसभाएं हैं, जिनमें से तीन पर कांग्रेस, दो पर स्थानीय दल पीजेपी तथा एक पर नवनीत राणा के पति रवि राणा विधायक हैं।

लोकन रवि राणा ने निर्दलीय उम्मीदवार के लिए उद्धव ठाकरे के साथ रहते हैं कि खजुराहो सीट जीत कर हम प्रदेश में ही नहीं देश में भी जीत कर देंगे।

भाजपा की जीत का अंतर बढ़ाना है तो ज्यादा मतदाताओं को मतदान केंद्रों तक लाना होगा।

तीन जिले और आठ विधानसभा सीट

इस संसदीय क्षेत्र में पन्ना, कटनी और छतरपुर इनकी कुल आठ विधानसभा सीटें शामिल हैं। इसमें पन्ना जिले की तीनों विधानसभा सीटें पन्ना, पटई और गुरार शामिल हैं। निवृत्यन क्षेत्रों में छतरपुर जिले के राजनार और चंदला और कटनी जिले के मुद्रवाला, विजय राघवगढ़ और बहारीबद शामिल हैं।

25 साल पहले कांग्रेस के सत्यवत जीते थे

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

लाख के लगभग रहा था। ऐसे में मंडा यह थी कि यहां सपा का यादव दाखिल करते रहे समय सत्यवत नहीं की और सपा कार्यकर्ता कांग्रेस के समर्थन में नई मतदाता सूची संलग्न नहीं की और कर्मपं में हस्ताक्षर भी छोड़ दिया। इसी कारण उनका फॉर्म रद्द कर दिया गया।

की मीरा यादव ने यहां उम्मीदवारी दाखिल करते रहे समय सत्यवत नहीं की और कर्मपं में हस्ताक्षर भी छोड़ दिया। इसी कारण उनका फॉर्म रद्द कर दिया गया।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आखिरी बार चुनाव जीती थी।

यह सीट 1957 में अस्तित्व में आई थी। 1989 से लगातार चार बार मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती खजुराहो से बुनाव जीत दुकी है। 1991 से चुनौती परिवार ही कांग्रेस को सालाना दिल लगा है। 1999 में कांग्रेस सत्यवत चुनौती के रूप में आख

कठिन दिनों की तकलीफें

- कमर व उन दिनों के दर्द • खून की कमी • कमज़ोरी • चिड़ियांपन
- थकान • हार्मोन्स की गड़बड़ी • खून साफ़ करे • रूप निखारे आदि में सहायक

90 वर्षों से महिलाओं की No.1 औषधि व टॉनिक



पूरे माह रहें एक्टिव,
फिट व स्वस्थ

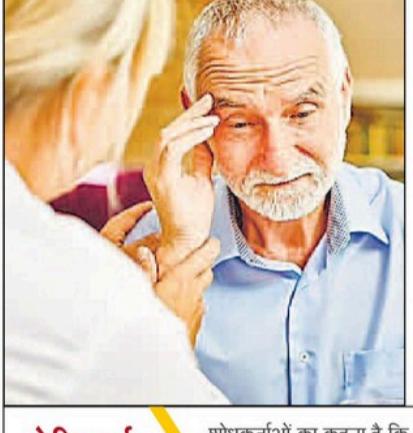
हेमपुष्पा

*Source: Brand Research Report, IBC 2018

मुश्किल और तनाव वाले कार्यों में व्यस्त रहने से अधिक सोचने का वक्त नहीं होता

अध्ययन: व्यस्त दिमाग से कम होता है डिमेशिया का जोखिम

■ सेहत



305

विभिन्न पेशें के 7000 लोगों पर अध्ययन

■ तनाव वाले काम करने से दिमागी कसरत होती है, पास नहीं आती ये बीमारी

रोजाना एक तरह का काम करने वालों को हुई बीमारी

हर दिन दिमागी तनाव झीलने वाले लोगों में 70 के बाद डिमेशिया का खतरा कम देखा गया वहीं जो हर दिन कम बुरीतियों को झीलने वाला काम या एक तरह के कामों में लिए थे जिनमें से 42 फौसदी लोग डिमेशिया के घोटे में आ गए। अधिक दिमागी कसरत वाली नोकरियों में शिक्षक और कॉलेज के लेक्चरर जैसे लोग थे वहीं हर दिन एक जैसा काम करने वाले लोगों में सफाई कर्मचारी, सड़क निर्माण कार्य आदि शामिल थे।

ये निष्कर्ष निकला

शोधकर्ताओं का कहना है कि जो लोग ऐसे काम करते हैं जिसमें दिमाग को कम खर्च करना होता है उन्हें अपनी नोकरी के अलावा अन्य पार्ट टाइम जॉब या आगे की पढ़ाई करनी चाहिए।

पहले के अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि शिक्षा का सकारात्मक असर होता है।

आसान काम देती है बीमारी:

शोधकर्ताओं ने बताया कि काम में वाताने को सोचने का वक्त नहीं होता,

व्यस्त रहने से लोगों के पास पुरानी वातानों को सोचने का वक्त नहीं होता,

जिससे वे डिमेशिया की चपेट में विभिन्न पेशें में व्यस्त 7000 लोगों नहीं आते। अध्ययन में 305 को लिया गया।

अफ्रीका में जलवायु परिवर्तन से चल रही गर्म हवा



खतरे में धरती

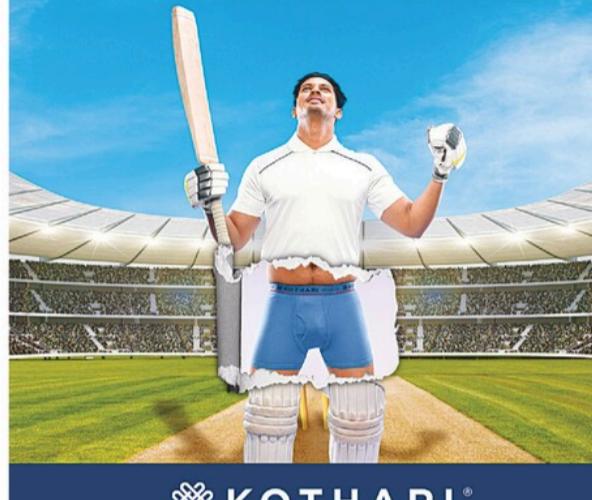
डिग्री तक पहुंच गया जिसे अनेकों मौसी भी हुई। डब्ल्यूडब्ल्यूए के शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन के दौरान इस्टेमाल किए गए विभिन्न जलवायु मॉडल और विश्लेषण के अनुसार, 'मार्च और अप्रैल 2024 में चलने वाली गर्म हवाएं 1.2 सेल्सियस के ग्लोबल वार्मिंग के बिना संभव नहीं' जिसके पीछे का कारण वैज्ञानिक मानव प्रेरित जलवायु परिवर्तन बताया है।

डाकर, एजेंसी। अफ्रीका के साहेल में अप्रैल के शुरुआत से ही जानलेवा गर्म हवाओं का जाकोप शुरू हो गया। वर्ल्ड वेदर एट्रीब्ल्यूशन (डब्ल्यूडब्ल्यूए) ने अपने अध्ययन में इनका कारण मानव प्रेरित जलवायु परिवर्तन बताया है।

यह अध्ययन गुरुवार को प्रकाशित हुआ। परिवर्तन अफ्रीकी देशों माली और बुर्किना फासो में एक अप्रैल से पांच अप्रैल तक काफी गर्म हवाएं चलती हैं। इसके साथ ही तापमान 45

रेडमी बड़स 5ए इसी माह लांच होगा

रेडमी बड़स 5ए इयरबड़स 23 अप्रैल 2024 को लॉन्च होने जा रहे हैं। शाओमी कंपनी रेडमी पैड एसडब्ल्यू के अलावा रेडमी बड़स 5ए भी ला रही है। रेडमी बड़स 5ए कंपनी के नेटर्स बजट टीव्हीबड़स होगे, इनका प्रयोग करते समय बाहरी शोर सुनाना नहीं देता। बड़स में आसपास के शोरगुल से किसी तरह की परेशानी नहीं आएगी। बड़स से प्योर साँड सुनी जा सकती।



KOTHARI®
FREEDOM
Premium innerwear

Kothari Hosiery Factory Private Limited

29, Strand Road, Mohta House 2nd Floor, Kolkata 700001 | P 84208 26999

मनुष्यों में बर्डप्लूके मामले चिंताकाविषय: डब्ल्यूएचओ

■ संयुक्त राष्ट्र स्वास्थ्य एजेंसी की वैज्ञानिक जेरेमी फर्रर ने इसे पशु महामारी बताया

बता दें कि जूनोटिक का अर्थ पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारी। भारत के केरल स्थित अलपुज्जा में बर्डप्लूके के मामले मिले हैं। अधिकारियों ने बताया कि एडथवा ग्राम पंचायत के वार्ड-एक के एक क्षेत्र और चेठना ग्राम पंचायत के वार्ड-एक के अन्य क्षेत्र में पालतू बत्तों में बर्डप्लूके पृष्ठ हुई है।

उद्देशन कहा, 'बर्डप्लूका का प्रकोप 2020 में शुरू हुआ था और अप्रैल से यह जारी रहा। फर्रर ने कहा कि यह दुनिया में जूनोटिक पशु महामारी बन गई है।'

इंडोनेशिया में जलालामुखी विस्फोट के बाद हवाई अड्डा बंद कराया

बता दें कि जूनोटिक का अर्थ पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली बीमारी।

भारत के केरल स्थित अलपुज्जा में बर्डप्लूके के मामले मिले हैं। अधिकारियों ने बताया कि एडथवा ग्राम पंचायत के वार्ड-एक के एक क्षेत्र और चेठना ग्राम पंचायत के वार्ड-एक के अन्य क्षेत्र में पालतू बत्तों में बर्डप्लूके पृष्ठ हुई है।

जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले राख

और आग ने यहां असामान कराए और भयानक बना दिया।

आसाम का डरावना रूप

: जलालामुखी फैलने से निकले र